अमर उजाला

नई दिल्ली । मंगलवार, 21 मई 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

जो केवल अतीत या वर्तमान को देखता है, वह निश्चित रूप से भविष्य को खो देता है...
-जॉन एफ कैनेडी

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति

पंजाब उन गिने-चुने राज्यों में से है, जहां आज कांग्रेस की सरकारें हैं, ऐसे में मुख्यमंत्री और एक प्रभावशाली मंत्री के बीच का यह विवाद सिर्फ एक सूबे का मामला नहीं है, बल्कि यह कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की कमजोरी को भी दिखाता है।

कैप्टन से तकरार

आम चुनावों के नतीजे आने से पहले पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह और उनके असंतुष्ट मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू के बीच जैसी तकरार चल रही है, उसे कांग्रेस पार्टी के लिए अच्छा नहीं कहा जा सकता। स्थिति यहां तक पहुंच गई कि सूबे में ऐन मतदान के दिन 19 मई को कैप्टन ने आरोप लगाया कि सिद्धू उनकी जगह मुख्यमंत्री बनना चाहते है! यह सारा झगड़ा लोकसभा चुनाव में टिकट बंटवारे से शुरू हुआ, जब कांग्रेस ने सिद्धू की पत्नी नवजोत कौर को चंडीगढ़ से टिकट नहीं दिया। सिद्धू और उनकी पत्नी दोनों को लगता है कि कैप्टन अमरिंदर सिंह की मर्जी से जानबूझकर उनका टिकट काटा गया और फिर इसे उन दोनों ने खुद की प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया। सिद्धू भले यह कह रहे हों कि वह 2015 में पवित्र ग्रंथ की बेअदबी करने वालों पर कार्रवाई की मांग कर रहे हैं, लेकिन जब उन्होंने अपनी पार्टी के कुछ नेताओं पर पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के परिवार और अकाली दल को चुनाव में फायदा पहुंचाने का आरोप लगाया, तो उसके निहितार्थ एकदम स्पष्ट थे। ऐसे में भाजपा महासचिव शहनवाज हुसैन के इस बयान पर हैरानी नहीं होती कि सिद्धू के बयान से उनकी पार्टी को फायदा पहुंचा है! सिद्धू की सूबे में लोकप्रियता है और उनकी पत्नी भी पिछली अकाली-भाजपा सरकार में अहम पदों पर रही हैं। यह संभव है कि कांग्रेस पार्टी के नेताओं के खिलाफ उनके आरोपों में सच्चाई भी हो, लेकिन जिस तरह से उन्होंने इसे सार्वजनिक किया है, उससे तो उनकी अपनी छवि ही खराब हुई है। सिद्धू इससे पहले पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होकर मुख्यमंत्री और कांग्रेस पार्टी, दोनों के लिए असहज स्थिति पैदा कर ही चुके हैं। सिद्धू राजनीतिक रूप से महत्वाकांक्षी हैं, यह कोई छिपी बात नहीं है और इसमें कुछ गलत भी नहीं है, लेकिन हकीकत यह है कि 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत दिलाने में कैप्टन अमरिंदर सिंह की सबसे अहम भूमिका थी। पंजाब उन गिने-चुने राज्यों में से है, जहां आज कांग्रेस की सरकारें हैं, ऐसे में मुख्यमंत्री और एक प्रभावशाली मंत्री के बीच का यह विवाद सिर्फ एक सूबे का मामला नहीं है, बल्कि यह कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की कमजोरी को भी दिखाता है।

क्या ईरान से बढ़ता तनाव युद्ध में बदलेगा

अमेरिका क्या ईरान के साथ युद्ध की ओर बढ़ रहा है? वास्तव में अमेरिका पहले ही एक दलदल में फंसा हुआ है। यमन के निरर्थक युद्ध में अमेरिका अब तक लगभग ढाई लाख मौतों में उलझ गया है, जिनमें से अनेक बच्चे हैं, जो भूख के कारण मर गए। कुछ ही दिनों पहले बम धमाके (संभवतः अमेरिका निर्मित) में चार यमनी बच्चे मारे गए। वहां हर बारह मिनट में एक बच्चा मर जाता है। कई बुरे खिलाड़ियों की वजह से यमन एक जटिल जगह है, लेकिन मूल बात यह है कि चूंकि अमेरिका की दुश्मनी ईरान के प्रति है और सऊदी अरब के साथ उसके अच्छे रिश्ते हैं, इसलिए वह यमनी बच्चों को भूख और बम धमाकों में मरने में मदद कर रहा है।

क्षेत्र में तनाव बढ़ने के साथ सऊदी अरब अब अमेरिका को दुश्मनी बढ़ाने और ईरान पर सैन्य हमले करने के लिए उकसा रहा है। बृहस्पतिवार को सऊदी सरकार से संबद्ध *अरब न्यूज* ने लिखा- 'अमेरिका को ईरान पर कड़ा हमला करना चाहिए।'

यह 2015 में सऊदी अरब की नीति थी, जब वहां के उन्मत्त युवराज मोहम्मद बिन सलमान ने यमन में हस्तक्षेप किया था। वह अपनी कठोरता दिखाना चाहते थे और यह मानते थे कि उनके सशस्त्र बल ईरान समर्थित गुट हूती विद्रोहियों को कुचल देंगे। इसके बजाय सऊदी अरब के हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप यमन में ईरान का प्रभाव बढ़ गया। जिसे संयुक्त राष्ट्र दुनिया का बदतर मानवीय संकट कहता है, सऊदी अरब ने उसे बढ़ाने में मदद की है। अब जब फिर से ईरान के साथ अमेरिकी संघर्ष की बात हवा में तैर रही है, यमन यह याद दिलाता है कि युद्ध में शामिल होना आसान है, जबकि उससे निकलना मुश्किल।

वे सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ही हैं, जिन्होंने यमन पर बम गिराए, लेकिन वाशिंगटन हथियारों और खुफिया सूचनाओं की आपूर्ति करता है, जो इस युद्ध को अनिश्चितकाल तक खींचने की अनुमति देता है। अमेरिकी नीति यमनी बच्चों को भुख से मरने देने का समर्थन करती है, क्योंकि वे ईरान से संबद्ध एक गुट से शासित हैं।

यह पक्षपातपूर्ण मुद्दा नहीं होना चाहिए। यमन में पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सऊदी अरब का समर्थन किया था, और ट्रंप ने उस समर्थन को दोगुना कर दिया। ज्यादातर राष्ट्रपति उम्मीदवारों ने (बर्नी सैंडर्स को छोड़कर, जो यमन युद्ध के सख्त विरोधी थे) यमन का ज्यादा जिक्र नहीं किया और जनता ने भी उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। मैं इसके बारे में आंशिक रूप से लिख रहा हूं, क्योंकि मैं पिछले वर्ष सऊदी नाकाबंदी के दौरान छिपते-छिपाते यमन चला गया था, जहां अपने द्वारा चुकाए गए कर को वहां बच्चों को भूखे मारने में मददगार होते देख स्तब्ध था।

अमेरिका जब पहले ही यमन के निरर्थक युद्ध में फंसा हुआ है, तब सऊदी अरब के उकसावे पर ईरान पर उसके हमला करने के भीषण नतीजे होंगे।

निकोलस क्रिस्टॉफ

अमेरिकी संसद ने युद्ध में अमेरिकी भागीदारी खत्म करने के लिए एक द्विदलीय प्रस्ताव पारित किया, लेकिन पिछले महीने राष्ट्रपति ट्रंप ने इस पर वीटो कर दिया। संयुक्त राष्ट्र का एक हालिया अध्ययन बताता है कि यदि युद्ध इस वर्ष समाप्त होता है, तो इसमें 2,33,000 लोग मारे जाएंगे और अगर यह 2022 तक जारी रहता है, तो कुल 4,82,000 लोगों के मारे जाने की आशंका है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि अगर यह युद्ध 2030 तक जारी रहता है, तो 18 लाख लोग मारे जाएंगे। संयुक्त राष्ट्र के यमन स्थित मानवीय समन्वयक लिसे ग्रैंडे ने इसी महीने मुझे बताया, 'हर महीने चीजें और बुरी होती जा रही हैं। आज यमन में कोई भी ऐसा व्यक्ति काम नहीं कर रहा, जो यह न मानता हो कि इस भयानक, संवेदनहीन संकट का एकमात्र समाधान संघर्ष को समाप्त करना है। हमें इस तथ्य का सामना करना होगा कि यदि युद्ध खिंचता है, तो यमन विफल राज्य हो जाएगा और पीढ़ियों तक अस्थिर रहेगा। लगभग हर परिवार ने किसी न किसी को खोया है, हर परिवार भूखा है, बच्चे स्कूल से बाहर हैं या हैजे से संघर्ष कर रहे हैं। यह समझना बहुत मुश्किल है कि क्यों इतने मासूम लोगों की जान इतनी कम लगती है।'

सऊदी अरब के उन्मत्त युवराज द्वारा यमन में जल्दबाजी में किया गया हस्तक्षेप न केवल उल्टा पड़ गया, बल्कि उसने ईरान की मदद की। लेकिन सीएनएन की जांच में यह भी पाया गया कि इसने अल कायदा से जुड़े लड़ाकों को अमेरिकी हथियार देने के लिए सऊदी अरब को प्रेरित किया। अराजकता के कारण हैजा फैल गया, जो हाल में और बिगड़ गया, वर्ष 2019 में अब तक 3,00,000 से अधिक संदिग्ध मामले सामने आए।

ईरान और हूती विद्रोहियों ने भी बुरा व्यवहार किया है, लेकिन यमनी बच्चों के खिलाफ युद्ध अपराध का समर्थन अमेरिकियों का सबसे खराब बहाना है। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात अब यमन युद्ध के प्रति उतने उत्साही नहीं हैं, लेकिन वे युद्ध छोड़ना और ईरान व हूतियों को नहीं जीतने देना चाहते। ऐसे में, मानना मुश्किल है कि इस मुद्दे पर अमेरिका के बल प्रयोग के बगैर यह युद्ध खत्म हो सकता है।

ट्रंप ने कहा है कि अगर अमेरिका सऊदी अरब को हथियार नहीं बेचता है, तो रूस या चीन उसे हथियार देगा। लेकिन सऊदी अरब को अमेरिकी स्पेयर्स पार्ट्स की जरूरत है, और यह आंशिक रूप से अंतर्निहित सुरक्षा गारंटी के लिए भी अमेरिकी हथियार खरीदता है, जो उनके साथ आता है। कोई भी अन्य देश ऐसी सुरक्षा उपलब्ध नहीं कराता है।

ब्रूकिंग इंस्टीट्यूशन में पश्चिम एशिया के विशेषज्ञ ब्रूस रिडेल का कहना है कि सऊदी सेना अमेरिकी स्पेयर्स पार्ट्स, लॉजिस्टिक और गोला-बारूद पर निर्भर है। अगर वाशिंगटन अपनी विशाल ताकत का इस्तेमाल करता है, तो सऊदी अरब के पास युद्ध को खत्म करने के सिवा और कोई चारा नहीं है। अमेरिका ईरान के साथ टकराव के बढ़ते जोखिम की ओर बढ़ रहा है और अमेरिकी नौसेना विशेष रूप से फारस की खाड़ी में एक दुर्घटना के बारे में चिंतित है, जो युद्ध के समय बढ़ती है। वर्ष 1988 में ऐसे ही तनाव के दौरान अमेरिका ने गलती से एक ईरानी यात्री विमान को मार गिराया था, जिसमें सवार 290 लोग मारे गए थे।

इसलिए ईरान के साथ सीधे युद्ध के जोखिम को कम करने के लिए अमेरिका को काम करना चाहिए। लेकिन ईरान की सीमा के बाहर इस पुराने और शर्मनाक युद्ध को भी नहीं भूलना चाहिए : यमन में बच्चों को भूख से मरने और उनके ऊपर बमबारी के लिए अमेरिकी समर्थन खत्म कर देने का वक्त आ गया है।

© The New York Times 2019

अंतर्ध्वनि

>> पांडेय बेचन शर्मा उग्र

क्रोध चाहे कोई करे, वह पाप का मूल होता है

अपने पिता की एक झलक-मात्र मेरी आंखों में है। मंदिर से आकर ब्राह्मण-वेश में किसी ने मेरे मुंह में एक आचमनी गंगाजल डाल दिया, जिसमें बताशे घुले हुए थे। मैं मां की गोद में था। उसने बतलाया, चरणामृत है बेटे! कितना मीठा! मैंने अपने पिता को बुरी तरह बीमार देखा, घर में चारों ओर निराशा! पिता का मरना ...आई का पछाड़ खा-खाकर रोना मुझे याद है। यद्यपि तब मैं बहुत छोटा, रोगीला, बेदम-जैसा बालक था। जब मेरे पिता का देहांत हुआ, मैं महज दो साल और छह महीनों का था। यानी मैंने जरा ही आंखें खोलकर दुनिया को देखा, तो मेरा कोई सरपरस्त नहीं! प्रायः जन्मजात अनाथ, ऐसा जिस पर किसी का भी वरदहस्त नहीं रहा।

चाची मेरी आई से तो कसकर झगड़ती थीं, लेकिन मुझे उनका वात्सल्य प्राप्त था। पाते ही प्यार से, पुचकार से वह मुझे कुछ-न-कुछ खाने को देतीं। लेकिन इसका पता लगते ही मेरी आई मुझे लिटाकर, देवरानी को दिखा-दिखा, सुना-सुनाकर धमार की धुन में धमकती थीं।

क्रोध माता करे या पिता, पति करे या पत्नी, बालक करे या युवा, होता है - पाप का मूल। मेरी आई परम क्रोधनी थीं, साथ ही परम भोली।

वह परिश्रमी भी जबरदस्त थीं। हमारे लंबे-चौड़े दरिद्र कच्चे घर को होली-दिवाली पर वह अकेले ही कछाड़ बांधकर पोतती या पीली मिट्टी से दिव्य कर देती थीं। फटे-पुराने कपड़ों की कंथा ऐसी सी देती थीं, जिसे सर्दी के दिनों में वरदान की तरह लोग ओढ़ते-बिछाते थे। कागज गला पल्प बना उसकी भद्दी टोकरियां बना लेती थीं। सीक के पंखे तो खासे बना लेती थीं। ब्याह-गौना, कथा वगैरह में सामयिक गीत गाने वालियों में वह आगे ही रहना चाहती थीं।

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> कैरॉन रॉनस्ले

आयरलैंड से आकर बावड़ियां साफ करने में जुटा

मैं आयरिश हूं और फ्रांस में पैदा हुआ हूं। लेकिन मैं भारत से बहुत प्यार करता हूं। मेरे दादा भारत में चीफ रेलवे इंजीनियर थे। मुंबई-वड़ोदरा (बंबई-बड़ौदा) रेलमार्ग के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा भारत में बिताया। वह भारतीय जीवन शैली के बड़े प्रशंसक थे। नौकरी से रिटायर होने के बाद वह इंग्लैंड लौट गए। वह हमें भारत के बारे में बताते रहते थे, जिसका असर मुझ पर पड़ा और मुझमें भारत को नजदीक से जानने की इच्छा प्रबल होती गई। हालांकि भारत आने से पहले मैंने पाकिस्तान में बीस साल बिताए। वहां मैंने कराची के एक बधिर स्कूल तथा प्रसिद्ध कराची ग्रामर स्कूल में पढ़ाया। स्कूलों में पढ़ाने के अलावा मैंने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े काम भी किए। सिंध के कुछ स्कूलों में भी मैंने अध्यापन का काम किया। पढ़ाने के काम से ऊब जाने के बाद मैं थार मरुस्थल के उमरकोट शहर में चला गया, जहां हिंदुओं की भी बड़ी आबादी है। पर पाकिस्तान का मेरा अनुभव अच्छा नहीं था। लोग तो मुझसे नाराज रहते ही थे, ब्रिटिश उच्चायोग तक ने मेरा सहयोग नहीं किया।

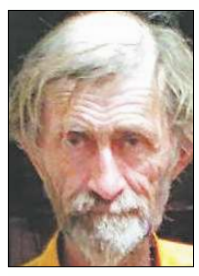

ब्रिटिश दौर में मेरे दादा यहां चीफ इंजीनियर थे। उन्हीं के किस्सों ने मुझे भारत आने को प्रेरित किया।

वर्ष 2014 में मैं भारत आ गया। शुरुआती कुछ वक्त मैंने इस देश को देखने में बिताया। उसके बाद मैं पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने के अवसर ढूंढने लगा। आखिरकार मैं राजस्थान में जैसलमेर के एक गांव हाडा में रहने लगा। वहां मैंने स्थानीय लोगों की सहायता से एक बगीचा बनवाया, जिसमें करीब एक हजार पेड़ लगवाए। वहां से मैं जोधपुर चला गया। जोधपुर में बावड़ियों ने मेरा मन मोह लिया। मैंने पढ़ा था कि भारत में कई जगह पीने का पानी इकट्ठा करने के लिए बावड़ियां बनाई गई थीं। बावड़ियों की खूबसूरती देखकर मुझे अपने दादा की याद आई, जो भारतीय संस्कृति की तारीफ किया करते थे। लेकिन बावड़ियों की हालत देखकर मेरा मन दुखी हो गया। मैंने स्थानीय प्रशासन से लेकर एनजीओ तक से बावड़ियों की साफ-सफाई में मेरी मदद करने के लिए कहा। लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। ऐसे मे, मैंने कुछ लोगों की मदद ली और बावड़ियों की सफाई में जुट गया। ये बावड़ियां अब शराबियों, जुआरियों के अड्डों में बदल गई थीं, जहां शराब की खाली बोतलें, बीड़ी-सिगरेट के टुकड़े और गंदगी भरी रहती थी। हालांकि सत्तर साल की उम्र में मेरे लिए एक जगह पर लंबे समय तक बैठना कठिन है, इसके बावजूद मैं छह घंटे तक अपने स्वयंसेवकों के साथ बावड़ियों की सफाई में लगा रहता था।

इस बीच मुझे मेहरानगढ़ फोर्ट ट्रस्ट से मदद मिली। उसने हमें बावड़ियों से पानी निकालने के लिए पंप तो दिए ही, वित्तीय मदद दी और साथ में पांच से दस स्वयंसेवक भी दिए। हर तीन से चार महीने में एक बार ट्रस्ट की ओर से दो सौ स्वयंसेवक भेजे जाते थे, तो बावड़ियों में इकट्ठा कूड़ा निकालने का काम करते थे। एक साथ इतने लोगों को देखकर स्थानीय लोग भी काम में हाथ बंटाने आ जाते थे। इससे स्थानीय लोगों में यह भावना पैदा हुई कि एक विदेशी बुजुर्ग उनके आसपास की गंदगी साफ करने आया है। जो लोग कभी मुझे पागल साहब कहकर चिढ़ाते थे, वे आज मेरा सम्मान करते हैं। मेरे लिए संतोष की बात यह है कि स्थानीय लोगों, छात्रों और युवाओं में यह सोच बन रही है कि केवल जल संकट से निपटने के लिए ही नहीं, पर्यावरण संरक्षण के लिए भी बावड़ियों को बचाया जाना चाहिए।

- विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

तेलंगाना में दल बदल का खेल

पिछले कुछ महीने के भीतर ही दक्षिणी राज्य तेलंगाना में कांग्रेस के 19 में से 12 विधायक टीआरएस में चले गए हैं। यदि एक और विधायक टीआरएस में चला जाता है, तो वे दल बदल विरोधी कानून के तहत अयोग्य होने से बच जाएंगे।

ऐसे समय, जब सारा देश आम चुनाव, एग्जिट पोल और संभावित नतीजों की चर्चा में मशगूल है, दक्षिणी राज्य तेलंगाना में एक दिलचस्प राजनीतिक घटनाक्रम हो गया, जिस पर लोगों का खास ध्यान नहीं गया। तेलंगाना में सत्तारूढ़ तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) ने दिसंबर, 2018 में समय से पहले चुनाव करवाए थे, जिसमें उसे राज्य की 119 में से 88 सीटें मिली थीं और दो निर्दलीय का समर्थन मिलने से विधानसभा में उसका आंकड़ा 90 पर पहुंच गया, जिससे उसकी स्थिति काफी मजबूत हो गई। विधानसभा चुनावों के नतीजे घोषित होने के बाद अन्य पार्टियों के सदस्यों ने टीआरएस का रुख करना शुरू कर दिया। खासतौर से कांग्रेस, जिसके कुछ महीने के भीतर ही 19 में से 12 विधायक टीआरएस में जा चुके हैं। यदि कांग्रेस का सिर्फ एक और विधायक टीआरएस का रुख कर लेता है, तो कांग्रेस के दो तिहाई विधायक पाला बदल चुके होंगे और वे दल बदल विरोधी कानून के तहत अयोग्य होने से बच जाएंगे।

तेलंगाना में 2014 में हुए पहले विधानसभा चुनावों के बाद से टीआरएस ने दल बदल को बढ़ावा दिया है, जबकि उस समय उसे 119 में से 63 सीटें मिली थीं। तब यह तर्क दिया गया कि कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने की कोशिश कर सकती है, इसलिए टीआरएस ने कांग्रेस के विधायकों को अपनी पार्टी से जोड़ने की कवायद की। जबकि तथ्य यह है कि टीआरएस ने कांग्रेस और अन्य दलों से आए ऐसे विधायकों के जरिये जमीनी स्तर पर अपना आधार मजबूत करने की कोशिश की, जिनकी लोगों के बीच पर्याप्त विश्वसनीयता रही है। अपने दूसरे कार्यकाल में भी

महेंद्र बाबू कुरुवा

टीआरएस की नजर कांग्रेस के विधायकों पर रही। पाला बदलने वाले पार्टी के विधायकों को अयोग्य घोषित करने से संबंधित कांग्रेस की याचिका विधानसभा अध्यक्ष के पास लंबित है। कांग्रेस ने अलग हुए गुट के टीआरएस में प्रस्तावित विलय को लेकर तेलंगाना हाई कोर्ट का भी दरवाजा खटखटाया है। हाई कोर्ट इस बारे में 11 जून को सुनवाई करेगा।

इस पृष्ठभूमि में हाल के राजनीतिक इतिहास की ओर लौटने की जरूरत है, जिससे अंदाजा लगाया जा सकेगा कि आखिर तेलंगाना में क्या हो सकता है। 2003 में उत्तर प्रदेश में बसपा के 13 विधायकों ने पार्टी से अलग होकर लोकतांत्रिक बहुजन दल के नाम से एक अलग गुट बना लिया था। बाद में 24 और विधायक उनसे मिले और पार्टी से अलग होने वाले विधायकों की संख्या 37 हो गई। उस समय बसपा के 98 विधायक थे और अलग होने वाले विधायकों की संख्या एक तिहाई से अधिक हो गई। इन विधायकों ने अपनी नई पार्टी का मुलायम सिंह यादव की सपा में विलय कर दिया, ताकि नई सरकार का गठन हो सके। विधानसभा अध्यक्ष ने भी इस दल बदल को मंजूरी दे दी। उस समय सदन में बसपा के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य की याचिका को इस तकनीकी आधार पर खारिज कर दिया कि यह दल बदल नहीं, बल्कि पार्टी में टूट हुई और फिर इस गुट का विलय किया गया, जो कि दल बदल कानून का उल्लंघन नहीं है। मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा, जिसने फरवरी, 2007 को 13 विधायकों को अयोग्य घोषित कर दिया। उस समय तक मुलायम सिंह यादव सरकार का कार्यकाल लगभग पूरा हो चुका था और विधानसभा चुनाव को सिर्फ दो महीने बचे थे! संविधान के 91 वें संशोधन के जरिये दल बदल कानून के तहत किसी पार्टी में टूट के समय अयोग्यता के दायरे में आने वाले विधायकों की न्यूनतम संख्या एक तिहाई से बढ़ाकर दो तिहाई कर दी गई। इस संशोधन के बावजूद छोटे राज्यों में दल बदल को रोक पाना अब भी मुश्किल है।

- लेखक, हेमवती नंदन बहुगुणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, उत्तराखंड में सहायक प्राध्यापक हैं।

खुली खिड़की

चीनी खिलौने का दबदबा

खिलौने और गेम्स के निर्यात में चीन का दबदबा कायम है, उसके बाद पोलैंड और ब्रिटेन का स्थान आता है।

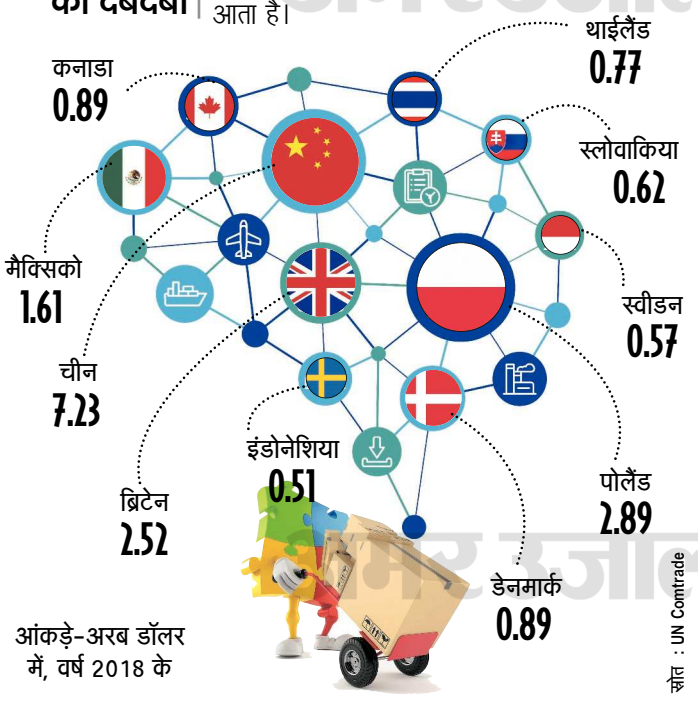

आंकड़े-अरब डॉलर में, वर्ष 2018 के

स्रोत : UN Comtrade

सामान नहीं, ज्ञान

स्वामी रामतीर्थ अमेरिका जा रहे थे। उनका जहाज सैनफ्रांसिस्को बंदरगाह पर पहुंचा, तो सभी यात्री जल्दी-जल्दी सामान उतारने लगे। लेकिन रामतीर्थ हाथ में एक थैला लिए हुए एक ओर शांत भाव से खड़े थे। उनके चेहरे पर न कोई घबराहट थी और न जल्दी उतरने की कोई उतावली। एक अमेरिकी काफी देर से उन्हें देखे जा रहा था। आखिरकार उसने उनसे पूछ ही लिया, आप भारत से आए हुए लगते हैं। लेकिन जहाज से अपना सामान क्यों नहीं उतारते? स्वामी जी शांत स्वर में बोले, मैं सामान का बोझ नहीं ढोता, सिर्फ ज्ञान का अर्थ समझता हूं। वह अमेरिकी उनकी बात सुन हैरान हो गया। उसने फिर पूछा, तो यहां कहां ठहरेंगे? यहां आपका कोई न कोई मित्र तो होगा? स्वामी जी बोले, हां, यहां मेरा एक मित्र तो है।

सत्संग

अमेरिकी ने अब सवालों की जैसे झड़ी लगा दी, कौन है वह? उसका क्या नाम है? क्या वह आपको लेने आ रहा है? स्वामी जी ने उस व्यक्ति के कंधे पर हाथ रखकर मुस्कराते हुए कहा, समझ लीजिए कि मेरा वह मित्र आप ही हैं। प्रेम की पवित्रता और निश्छलता से भीग चुका वह व्यक्ति सचमुच स्वामी रामतीर्थ का मित्र बन गया। जब तक स्वामी जी अमेरिका में रहे, उसी के यहां रहे। स्वामी जी के ज्ञान और आत्मविश्वास ने उस व्यक्ति को ही नहीं, उसके परिवार और मित्रों को भी स्वामी का जी का शिष्य बना दिया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

कियान, मंजूला और खुशी

एक शादीशुदा जोड़े की कहानी, जिसे खुश रहने का राज एक गरीब दंपति के करीब जाने के बाद पता चला।

कियान और मंजुला की नई-नई शादी हुई थी। दोनों बहुत खुश थे। कियान को पता चला कि शहर में एक जाने-माने ज्योतिषी आए हुए हैं। दोनों अगले दिन उनके पास पहुंच गए। कियान ने ज्योतिषी से कहा, स्वामी जी, हमारे पास किसी चीज की कमी नहीं। हमारी सोच भी काफी मिलती है। हमारे बीच कभी कोई परेशानी न आए, इसका उपाय बताइए। ज्योतिषी बोले, आप बस कोई एक ऐसा जोड़ा ढूंढ लीजिए, जो हमेशा खुश रहता हो। उसके घर से उसका एक कपड़ा लाकर अपने घर में रख लीजिए। आपके घर में कभी कोई अशांति नहीं होगी। कियान और मंजुला हमेशा खुश रहने वाले जोड़े की तलाश में लग गए। उन्हें पता चला कि राजपाल का परिवार बहुत खुश रहता है। उनके घर पहुंचकर उन्होंने देखा कि राजपाल के पास तो अपनी पत्नी के लिए समय ही नहीं है। जो आपस में बात भी न करें, वे कैसे खुश रह सकते हैं, यह सोचकर वे वहां से लौट गए। एक रिश्तेदार ने उन्हें दूसरे शहर में एक सुखी दंपति के बारे में बताया। वहां पहुंचकर उन्होंने पाया कि वे खुश तो हैं, पर यह उनकी पहली शादी नहीं। कियान और मंजुला घर लौट आए। कई शहरों की दौड़ और कई लोगों से मुलाकात के बाद भी उन्हें ऐसा कोई दंपति नहीं मिला, जो हमेशा खुश रहता हो। फिर उन्हें राजस्थान के एक सुखी परिवार का पता चला। उन्होंने देखा कि वे बहुत गरीब हैं। उनके पास खाना नहीं, पहनने को कपड़े नहीं, घर की टपकती छत ठीक करवाने को पैसे नहीं। उनके साथ दो दिन बिताने पर उन्होंने पाया कि सचमुच वे बहुत खुश हैं। कियान ने उनसे पूछा, गरीबी में भी आप इतना खुश कैसे रहते हैं? वे बोले, हम एक दूसरे के लिए हैं, और एक दूसरे के साथ वह सब कुछ हासिल कर सकते हैं, जो हम चाहते हैं।

जिस खुशी को हम बाहर तलाश करते हैं, वह और कहीं नहीं, अपने अंदर होती है।